

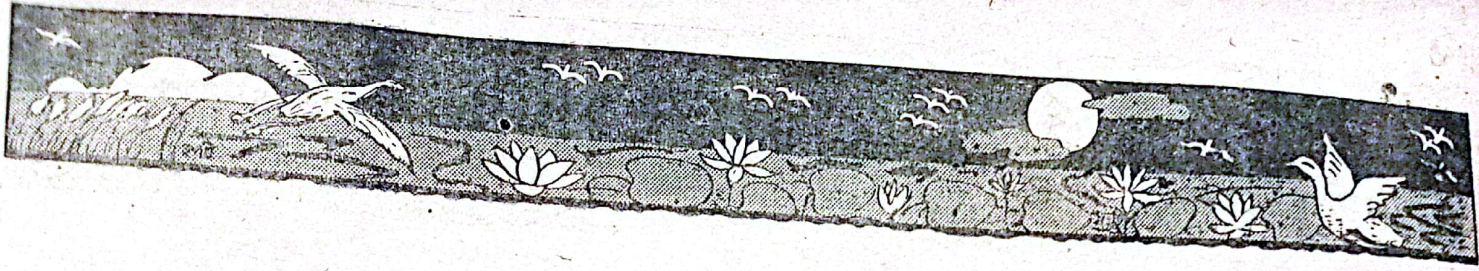
एक सुखद समाचार

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र, 'अमर' :

कविता सुनबाक हेतु बंसल छी अपनैसभ
किन्तु हम सुनायब एक परम सुखद समाचार
सुखद कहौ, शुभद कहौ, हमरा हित सँह थिक
भऽ सकैछ अहाँ हेतु एहिसँ किछु भिन्न हो
सरलो हो, सड़लो हो, वा मनमे गड़लो हो
सुनलो हो, जनलो हो, नोन तेल सनलो हो
भऽ सकैछ पलखति बिनु पढ़लोपर विसरल हो
बुद्धिकेर बटुआसँ चुप्पेचाप ससरल हो
थिक मुदा एक प्रमुख चिन्तनीय समाचार ।

अपनाकेँ सुनल होयत--
संसारक शक्तिमान देश सभ
विदेशकेर रक्षा लेल आकुल अछि
नहि त आशंका जे विश्वशान्ति चटपटमे खतरामे पड़ि जायत
दोसर आशंका जे मानवता मरि जायत
तखन फुजल पाड़ा सभ सगर खेत चरि जायत
सम्भव थिक धुरी छोड़ि धरतीसँ ससरि जायत
ताहि हेतु शक्तिक अछि सन्तुलन आवश्यक
एकक भय दोसरकेँ रखत अस्तित्व तँ
एक नहि दोसरपर कऽ सकत आक्रमण
तेँ बनाय एटमबम, हाइड्रोजन आदि आदि
कऽ कऽ विस्फोट अपन शक्तिकेँ नर्पत अछि
कृत्रिम उपग्रहसँ अन्तरिक्ष बाट पकड़ि
धरतीकेर लोक चन्द्रलोककेँ टपत अछि ।
प्रकरण थिक यह जाहि प्रकरणमे काव्यमगन
बहुतो उपग्रहसँ सम्प्रति आच्छन्न अछि
चक्कर ओ मारि रहल गुरुक अन्वेषणमे

अर्थगुप्त, भाव गुप्त, रस अलंकार गुप्त
रखन छल नुका-नुका पूजोपति काव्यग्रन्थ
अलंकार आभूषण, बृहत् कोष संग्रह कऽ
रखितोपर अपनाकेँ मान छल मटोमोट ।
जाते ने एकरा जे क्रान्तिक युग धुआँधार
बबलि रहल विश्वभरिक परिभाषा, अभिलाषा
रीति, नीति, पद्धति ओ सभ पुरान मान्यता ।
भ्रान्तिक अन्हार बीच क्रान्तिक आह्वान सूनि
शान्तिक सुरक्षा लेल साहित्यक माथपर
अणुबम विस्फोट भेल
किछु विधा नुकाय रहल, किछु विधा पड़ाय गेल
किन्तु पड़ल चोटोपर कविता आ कथा दुनू
कथा तँ नड-डाइत कहूना जान टा बचौने अछि
कविता बेचारी किन्तु मारलि गेलि अनचोके ।
मारलि गेलि कविता, आ मरि गेलि कविता तँ
कवियोकेर जान छुटल पिगल उनटयबासँ
सम्प्रति तँ कविताकेर अंग अंग चीरि-फाड़ि
डाक्टरेट पयवामे लागल छथि अनुसन्धाता
मम्मटसँ अम्मट घोरवा रहला प्रेमसँ
दण्डी छथि दण्डित आ विश्वनाथ ज्ञानवापी
मध्य कूदि भीतरसँ टुक-टुक तकैत छथि
पिगलसँ पिण्ड छुटल, परम सुखद समाचार
हमरा लेल, भऽ सकैछ अहाँ हेतु भिन्न हो
बंसल छी अपनै सभ सुनबा लेल कविता
आ सूनि लेलहुँ कविताकेर मृत्युक शुभ समाचार ।



प्रणिवेदित

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र, "अमर" :

हमर प्रेम की थिक
से हमराधरि बूझल अछि
हम मात्र हमही छी
अहंकेर छूति नहि,
प्रेमके विसंगति हम बूझल नहि जीवनमे
संगति थिक प्रेम
जे समाज बीच रखने अछि।

हमर 'हम'—

पुत्र, पिता, मित्र, भाय, बन्धु, पति,
शिक्षक ओ छात्र आदि

रहिकऽ समाज बीच

सभ किछु बनैत अछि।

सभ किछु बनबामे

बहुत किछुक काज छैक

अतः ताहि सभ किछु केर

करितो जोगार अछि।

पिताकेर प्रेम—

सौंस नारिकेर पुत्र हेतु

ऊपरसँ सक्कत ओ रुच्छ सन लगैत अछि

भीतरमे—

सजल, तरल, दुग्धोज्ज्वल कोमल फल

खयलेपर बूझल जाय

व्यर्थ स्वाद कहने की ?

पुत्रकेर प्रेम

पिताकेर हृदय-घृतक हेतु रौद थिक,

देखलासँ लगले पिघलि जाइछ।

शिक्षककेर प्रेम

शुद्ध भुल्लो कुसियार बूझ

देखबामे ठेड़ा सन,

देखि चौंकि उठी

मुदा जै-जै चिबबैत जाउ

मधुरै बूझैत जाउ।

मित्रकेर प्रेम

पानि चिल्ली केर रूप स्वतः

आपसमे मिललासँ

भिन्नता समाप्त तुरत।

भाय-बन्धुकेर प्रेम

डोरी ओ डोल बनल

तृषित जे समाज

तकर तृषा मेटा दैत अछि।

जीवन थिक साइकिल

पति-पत्नीकेर प्रेम

'कंक-चेन' बनल

साइकिलके आगाँ घिचैत अछि।

किन्तु जे समग्र रूप प्रेमक हम देखल से

दूध मध्य अर्तहित

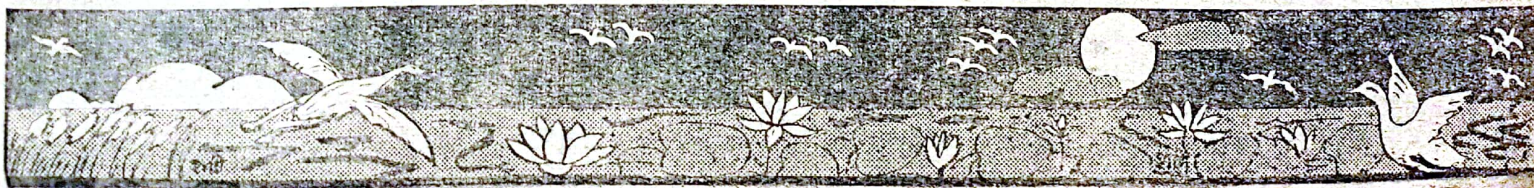
ननुक समान अछि

मथलासँ फक्क दस कऽ

ऊपर अलगि जाइछ

लाख यत्न कयलोपर

मिश्रित नहि होइत अछि!





— श्री चन्द्रलाल मिश्र 'आम' —

आइ दस दिनसँ डाक्टर साहेब अपन समस्त योग्यताक उपयोग कऽ चुकलाह, मुदा क्रम-पात एहन न लगेत छनि जे प्रायः एहि रोगीक प्रसंग हिनका यश लिखले नहि छनि, अथवा सोने बाबूक ग्रहे तेना बिगड़ल छनि जे प्रायः मारकेश लागि गेल होइनि ।

आइ.नमे स्त्रोगलोकनिक विश्वास छनि जे बुढ़िया पीसीक आइ.नसँ जहियासँ नीत खाकऽ अया-लाह तहियेसँ सोने बाबूक पेट कने मने कऽ गड़गड़-गुड़गुड़ करैत आवि रहल छलनि आ ओहि दिन धनेश्वर बाबूक गाछक लिच्ची टुटलनि तँ एहन महर्गयोमे आने साल जकाँ अपन हित अपेक्षितकेँ बजाकऽ दस-पाँचटा कऽ लिच्ची देलथिन, मुदा सोने बाबूकेँ बैँकऽ चालिस पचासटा खोओलाक बाद धीया पूताक हेतु पन्द्रह बीसटा हाथकऽ देलथिन । ओह कालमे बुढ़िया पीसी टुकुर-टुकुर हिनकेदिनतकैत रहथिन ।

प्रसार करथि । जखन मैथिलीक सम्बन्धमे • दृष्टि साफ (Clear conception) भऽ जायत तखने नीक जकाँ मैथिलीक विकास कयल जा सकत ।

अन्तमे लिखैत छी जे एखनो जँ मैथिली क्षेत्रक विद्वान ओ विचारक लोकनि एहि सम्बन्धमे विचार कऽ सही दृष्टिक पूर्ण प्रचार नहि करताह तँ मैथिलीक विकासक मुख्य अवरोधक दोसर नहि केवल मैथिलीक पठ-पोषके लोकनि बूझल जयताह ।

एहि सम्बन्धमे जे कोनो कार्यक्रम आ मुजाब अन्त विद्यापति-गोष्ठीकेँ देल जायत, ओकर स्वागत कयल जायत आ भरिसक ओहि प्रस्तावकेँ कार्यान्वित करवाक हेतु प्रयासो कयल जायत ।

आई के नहि जनैत अछि जे खाम्खान अपना घरवलाकेँ मारिकऽ ई डेनपन लिखने रहथि । गाम भरिक लोक हिनका आँखिक आतंके वस्तु रहैत अछि । तँ डाक्टर साहेबक दवाई काज करनु तँ कोना ? आ तँ झोटहा पंचक सर्व-सम्मत विचार छैक जे बुढ़िये पीसीक होरा मिनती कयल जाय, मुदा ई दुस्साहस करय तँ के ?

आइ दस दिनसँ सोने बाबूक पेट बहि रहल छनि, शरीर ततवा दुबल भऽ गेल छनि जे जाहि घरमे रहैत छथि ताही घरक कोनमे आव एकटा पैघ एन अथवा राखि देल गेल छनि, ओहीमे मल मूत्रक त्याग करैत छथि । एहन काला पहाड़ रन धूआ खनि-हार सोने बाबूक शरीर लटिकऽ ओछाओनमे सटि गेलनि अछि । जिंजासा पुछारि कयनिहार लोकोकेँ हिनक ई दशा देखि आँखि छनछला उठैत छैक ।

शरीर-रक्षाक हेतु लोक बहतरि उपाय करैत अछि, अन्तको मल ऊचैत अछि, किन्तु लोभी व्यक्ति जे किछु पर्वत अछि से सभ नीके नहि होइत छैक । प्रस्तुत वीरभक्त रसक कथा वास्तवमे एहन वांछ अछि जे रोमांच उत्पन्न करैत अछि ।

डाक्टर साहेब एहि परोपट्टामे धन्वन्तरिक अवतार कहबैत छथि । जकरा नहि झूठवाला रहैत छैक तकरा पहिने निराल देत छथिन आ हिनकर निरसलकेँ दरभंगा मधुवनकेँ के पूछय पटनो राँचीक डाक्टर आइ धरि नहि बचा सकलथिन अछि । जहिया कोसक जोर रहनि एहि सभ ठाम आ मलेरिया महारानी अपन सोइहो कला लऽ कऽ कोसिका

माताक संग नडऽ नाच कऽ रहल छलीह, पट्टाक पट्टा सबुजदाना आ डिब्बाक डिब्बा वाली सरकारकदिसँ बाँटल जाइत छलैक । क्यो मरैत छल तँ ब्राह्मण भोजन पर्यन्त सबुज-दानेसँ करवऽ पड़ैत छलैक, तहियेसँ ई डाक्टर साहेब एहि परोपट्टाक सेवा कऽ रहल छथि । छोटकासँ बड़का धरि के एहन होयत जकरा आँखिमे एहि डाक्टर साहेबक हेतु पानि नहि होय-तैक । मुदा एहन डाक्टर साहेब सोने बाबूक बहैत पेटकेँ बन्धवामे असफल भऽ रहलाह अछि !

आइ डाक्टर साहेबक विचार भेलनि जे सोने बाबूक पैखानाक जाँच करा देल जाइनि तखने कोनो दवाईक प्रयोग करव उचित होयत ।

पैखाना जँचयबाक हेतु, निर्मलीमे नीक जकाँ नहि भऽ सकैछ, तँ क्यो दरभंगा जाथि । निष्कर्ष ई बहरायल

घुस्के करताह । तँ अवध आइ भोर-हरवाक गाड़ीसँ लहेरियायराय जाथि ।

एकटा पैघ एन नवका मटकूड़ी आनल गेल । तीन वजे रातिमे सोने बाबूकेँ उठाकऽ ओहिमे मलत्याग कराओल गेल । मल की रहतनि, घोरल धारल पानि बूझ । अवधकेँ बुझना गेलनि जे आइ हमर बध भऽ रहल अछि । भोरे-भोर ई विष्ठा लऽ कऽ जाय पड़त, मुदा सोने बाबूवला वात । सोने बाबूसँ ओना गाममे के एहन होयत जकर उपकार नहि भेल होइक ? ककरो ओहिठाम मुर्दा पड़ल होइक, आगाँ साने बाबू होयताह, केहनो अड़ैजँध गाछ होइक, सोने बाबू जारनि कटताह, केहनो भारी बड़ोरी अथवा ठाठ होइक, सोने बाबू सभसँ पहिने जोर लगोताह, केहनो भारी गिल होइक, सोने बाबूक कान्ह सभसँ पहिने लगतनि । केहनो पैघ टोकना हो, सोने बाबू भोजक भात पसोताह, केहनो जवईस्त खोर रहौक, सोने बाबू दही परसताह आ कतबो थोड़ सामग्री रहौक, सोने बाबूकेँ बारिक बना दियऽ, सभक अँटाबेस कऽ देताह । ई तँ भरि गामक वास्ते, मुदा अवधक हेतु सोने बाबू की कीने कयने छथिन । ओहि बेर जे अरियासँ झगड़ा भेलनि तँ सोने गड़ासँ अवधक गर्दनपर पड़ितनि, आ से बीचेमे सोने बाबू चल अयलथिन । कपारपर जे ई बड़का दड़ारि देखैत छथिन से ओही गड़ासक घाओ थिकनि । जाहि अवधक हेतु सोने बाबू अपन मूडी महिषामे दऽ सकैत छथि, ताही सोने बाबूक प्राण रक्षाक हेतु आइ अवधकेँ जँ भोरे भोर ई मटकूड़ी उठवऽ पड़ैत छनि तँ नाकर-नुकर करव कोना उचित होइतनि ?

अस्तु, अवध विदा तँ भेलाह मुदा ओहि मटकूड़ीकेँ लऽ जयबाक जोगाड़ धरबे ने करनि । अके भऽर

मनुक्खक जीवन

१. ओ सलितेश :

झक्-झक् इजोरिया
अडनामे खाटपर
हम सूतल छी
मने सपनामे सूतल छी
मुदा अलायल अवस्से पड़ल छी
आखिमे एकटा दृश्य आयल
तुरते विला गेल
फेर देखैत छिरेक
दुपहरियाक रोद—
मने अषाढ़क बड़का रोद
बहु तिवख छैक
रोदमे आखि चोन्हारा जाइत अछि
तयो डंग बढ़ैत छी
एक्के क्षणमे गाछी पहुँचि गेलहुँ
गाछ सभ लागि गेल अछि
कवका आम सभ आब गेल अछि पाकि
वैह आम
जे पहिने मंजर छल
आ फेर कवका आम भेल हरियर कंचोर
कमशः पकल आ
एदम घुलि लैक
विहाड़ि उल्लैक, हम पथिया लऽ गाछ लग जाइत छी
पकलका आम सभ खसल पड़ल अछि
मने आइ ओ डारि-गाछसँ पृथक् भऽ गेल अछि
हम ओकरा खाइत छी,
ता नान्द फूजि जाइत अछि
सोबैत छी 'मनुक्खक जीवन'
एहिना अछि
ओकर बाल्यावस्था कवका आम थिकैक जेना
ओही कमशः जुवान होइत
बुझारैक गतमे प्रवेश करइछ
तत्पश्चात् आम जकाँ
टटि कऽ ओकरा जाइत अछि
मने जीवनक अन्त भऽ जाइछ
सदाक हेतु
दुनियाँसँ भेटा जाइछ
यह थिक
की ?
—'मनुक्खक' जीवन
मात्र एतबै ।

बलदेव पुस्तकालय, बनगाम, सहरसा ।

छलैक तेमहर कऽ वर्धक खूब तरकऽ
कोनमे लऽ जाकऽ मटकूड़ीकें रखलनि
आ तखन आश्वस्त भेलौह । तमाकू
चुनाकऽ ठोर तर रखलनि आ अंग-
पोछाक बीड़ा जकाँ बनाकऽ माथ
तरकऽ लेलनि आ सूति रहलाह ।

स झाँ सँ झाँ वर्धपर बंसल
एक व्यक्ति अवधक समस्त क्रिया
कलापकेँ आवधान भऽ देखि रहल
छल । ओकरा दृढ़ विश्वास भऽ गेलैक
जे एहिमे अवश्य कोनो विशिष्ट पदार्थ
रखने अछि । ओ अनुमान कऽ

लागल जे कोन एहन वस्तु भऽ सकै
छैक ? अन्तमे ओ निष्कर्षपर पहुँचल
जे भऽ सकै छ एहिमे घिउ हाइक अथवा
एहसँ अधिक मूल्यक कोनो वस्तु ।

ओ एही ताकमे छल जे अवध
निन्न होइनि । संयोगसँ अवध भेर भऽ
सूति रहलाह । गाड़ी कोना कोना
स्टेशन पार कयलक से हिनका बूझ-
वाक जोगर नहि भेलनि । यद्यपि
बीच-बीचमे कतेक यात्री हिनका
उठाकऽ बैसवाक चेष्टा कयलक, मुदा
अवधक कम-पात एहन मन जे कुम्भ-
कर्णसँ सात पुस्त नहि भेल होइनि ।
टाड-टाड मोड़ैत-मोड़ैत मोटरक
आकार भेल सुतले छलाह ।

सकरी स्टेशनपर गाड़ी ठाढ़
छलैक । एकटा टी० टी० सी० मूड़ी
हिलाकऽ उल्लकनि तँ घड़कड़ाकऽ
उठलाह । ई स्मरणे नहि छलनि जे
रेलमे सूतल छी । आखि फुजलनि तँ
सोझाँमे टी० टी० सी०केँ ठाढ़ देखि
भक् टटि गेलनि । जल्दीसँ अंगपोछाक
खूँटमे बान्हल टिकट फोलिकऽ देखऽ
देखलनि । तखन मोन पड़लनि मट-
कूड़ी, नमरिकऽ चट दऽ त मे तक-
लनि । आहि रे वा ! मटकूड़ियाँ र
छल । निर्मलीमे जे संग संग चढल
छलनि से निस्त्ता । हिनका अङ्घ्रिया
कटैत लोक सभ देखलकनि तँ पूछऽ
लगलनि जे की हेड़ायल अछि ? मुदा
अवधकेँ तँ बूझ बध लागि गेलनि ।
लोककेँ कोनो कहयुन ? जहिना
जहिना लोकक जिज्ञासा बढ़त जाइक,
अवधक मुँह विद्युआयल जाइनि ।

सकरीमे गाड़ीक 'क्रॉनिंग'
होइत छैक । अन्तमे अवध पुनः
निर्मलीवाली गाड़ी पकड़वाक निश्चय
कयलनि । मोनमे होइनि जे एतेक
दिनसँ काबिल बूझल जाइत छलहुँ
से आइ बुझिक बझल जायब ।
लोककेँ कहवैक जे मटकूड़ी चोरा
ले लोक तँ लोक विश्वास करैत कि नहि
दोहर, आइ फेर सोने काकाक दबाइमे
बकैना भऽ गेलनि । किन्तु धीरे
जयवाक अतिरिक्त आन उपाय कोन
छलनि ?

X X X X

अवध जखन निन्न भऽ गेल छलौह
तखन हिनक आङ्घ्रिया लंक लागैत
(शेष पृष्ठ २२ पर)

धराओल गेल मुदा सभ जोग
उरुबूझ पड़नि । अन्तमे मटकूड़ीक
मुँहपर केराक वीर पात दऽ एकटा
पादिसँ बान्हल गेल आ तकर बाद
धोआओल एक पुरान कपड़ामेसँ
टुकरा फाड़िकऽ ओकरा ओरियाकऽ
बान्हल गेल । फेर सुतरीक सीक जकाँ
छोट सन बनाओल गेल, ताहिपर
सोझाँ ओहि मटकूड़ीक पेनकेँ
राखल गेल । किन्तु ई आशंका व्यक्त
कयल गेल जे रेलगाड़ीमे कदाचित
टढ़ टढ़ भऽ गेलापर घोरल धारल
मल हेड़ाय ने जाय । तँ पोआरक
एकटा बीड़ा सीटिकऽ बनाओल गेल
ताहिपरसँ मटकूड़ीकेँ राखि सीकमे
बझाकऽ ऊपरमे कसिकऽ गीरह देल
गेल । तखन ओकरा वामा हाथे
लटकाकऽ अवध स्टेशन गेलाह ।

एहि सभ ओरियन-पातमे समय
ततबा लागि गेलनि जे गाड़ी फूज-
फूज पर भऽ गेलैक । तँ हेड़ायाँले
कानहुँगा टिकट कटोलनि आ रेल
गाड़ीमे चढलाह । रच्छ छलनि जे
निर्मलीएसँ गाड़ी बनैत छैक तँ जगह
फैलत अछि गेलनि । चित्त जे चंचल
भऽ गेल छलनि तँ फैलसँ जगह
भेटलो उत्तर हाथक मटकूड़ीकेँ
रखवाक जे गाड़ नाक जकाँ अखे ने
करनि ।

पहिने उबरका तखन परकऽ
रखलनि । दू मिनटक बाद भेलनि जे
कदाचित ऊपरसँ मटकूड़ी गुडुकि नहि
जाय । तँ फेर उठिकऽ ओकरा घुसका
कऽ आरो भितर कऽ रखलनि आ
निचका 'वर्थ' सौंसे खाली छलैक
ताहिपर लम्बायमान भऽ गेलाह ।
पाँच सात मिनटक बाद मोनमे भेलनि
जे भितरका समय छैक जे कदाच
निन्न भऽ जाय आ टोपनपर 'पैट'
बदलैत काल मटकूड़ी टगि गेल तँ
जुलुमे होयत । बल तुल्लत उठिकऽ
ओकरा उतारिकऽ वर्धक नेचामे
रखलनि आ पुनः पड़ि रहलाह । फेर
पाँच सात मिनटक बाद आशंका
भेलनि जे कदाचित घड़कड़ायल कोनो
यात्री अलहुआक बोरा तरकऽ ठूझि
दैक तँ मटकूड़ी उतारि ने जाय । तँ
फेर उठलाह आ जेमहरकेवाड़ी नहि

सरोज—गाय नानी, एहि रेडि-
योक दाम छौ सय टाका छैक ।
नानी—गहम कइ लागल छै ;
दाम कमि जयतैक आव ।

हमरा भाइजीक एक टा मित्र
छथि दानानाथ । ओ कोनो टुकक
पछिवा भागमे “फिर मिले”,
“नमस्ते”, “हार्न प्लेज” आदि शब्द
लिखत देखलथिन । हुनका ई बुझबामे
अपजानि जे तीनू शब्द प्रायः पर्याय-
वाची छि । एक बेर हुनका डेरापर
किछु पाहुन-परक अपजानि । ओ
लोकने जखन चउस लाजह तँ
भाइजीक मित्र सेहो हुनका लोकनेकेँ
विदा करैक हेतु किछु दूर धरि सड
देखथिन । घुस्वाक काल भाइजीक
मित्र दुनू हाथ जोड़ि अतिथिलोकनेकेँ
नमस्कार करैत कहलथिन—“बेस,
‘हार्न प्लेज’ !

—रुग्गा कुमारी “मुन्नी,
बनगाम (दक्षिणगारि टोल), सहर्षा
राम (गोआरक) — दुवमे
पानि किछु फेंटल छैक ?

गोआर—सरकार, हम नहि
फेंटतहुँ प्रभुत हमर महिन पोवरिमे
चलि गेल छैन तँ पानि फेंट गेल ।

शिक्षक (छात्र) — मिथिलेश
तोहर लक्ष्य काँ छैक ?

मिथिलेश—हमर लक्ष्य थिक
शिक्षकलोकनिक वेतन पुरायब ।

पिता (पुत्र) — तँ गदहा
छह ।

पुत्र—पिताजी, तखन अहाँकेँ
सब गदहाक पिता कहत ।

राम—बधुमाछेसँ तोरा की
लाभ भेलह अछि ?

श्याम—पाहुन लभक आगमन
बन्द भऽ गेल ।

राम—ह लखन, मक्खन कवन
ओथून ?

मक्खन—जखन दूध दूहल
जायत ।

नाम—मुनीलकुमार झा ‘मुमन’
सि० वे० विद्यालय-अड्डेर, वर्ग—उत्तम

शंकर (अनन मातासँ) हमरा
जे चोट लागल छैन सेठक भऽ गेल ।

परंव एखन धरि चित्त शेष छथि ।
माँ—तब खबरसँ मेटा ले ।

नोकर (मालिकसँ) आइ रातिमे
लालेम नहि मिझलएक दिन भरि

जरैत रहल । आव साँझमे ओकरा
जराबड लेल कठौ नहि खर्च करऽ

पड़त ।

जज (एकटा नेतासँ) ई गाय
आ बाछा ककर छैक ?

नेता—सर गाय तँ हमरा तहि
बूझल जे ककर छैक परंव बछा
ककर छैक से बूझल अछि ।

जज—ककर ?
लड़हा—गायक ।

नाम—विशोदकुमार चधर निर्मली
(वर्गा)

बुझौ अछि

चारि खुट्टा एक नगर बनाओल
चारू कूआँ विनु पानी
ओहिमे चोर अठारह बैसल
लेने एक रानी ।

एकरा देखि एक सिपाही दोड़ल आल
पीट-पाटिक कूआँ बीच डुबाओल
—फेरमबोर्ड

पेटमे अँगुरी ऊपर पाथर—ग्रौठी
सात सहेली जंगल चलली

चलल रामकेर साथ ।
जाइत जाइत की देखलक

फलक ऊपर दू पात ।
—प्रनाताश वा शफरी क हर ।

एक अजगुत जानी देखल
जे धयने बुढ़वाक कान

नक पकड़िक ओकरा पठाव
बौआ झट कइ अनुमान—चश्मा

ऊपर ढकना भीतर ढकना
तई भीतर ऊजर चखना

—नारियर
पुष्पा कुमारी आ—फेंट, जिः दरभंगा

(बिहार) ।

सनेस
(एछ १० क शेषांश)

छन । अंझारपुर ओकरा उतरवाक
छनैक । उतरैत काल देखलक जे ई

मटकूड़ीवलाक नाक जोर जोरसँ
बाजि रहल छैक । ओ चुप्पे अकच-

काइत मटकूड़ी उडैलक आ उतरि
गेत । अंझारपुरमे गाड़ी किछुकाल

अँकैत छैक । तँ मोनमे आशंका
छनैक जे जँ कदाच एही दीचमे

ओहि यात्रीक निन्न टटि जाइक ।
ताही द्वारे ओ झटकल चल जाइत

छन । जावत गाड़ी फुजलैक नहि
तावत ओ झटके चलैत रहल ।

गाड़ी फुजलैक तँ ओकरा जानमे जान
अयलैक ।

की मातृभूमिक रक्षाक व्रत खेलहुँ अछि ?

मोनमे उत्सुकता छलैक जे
आखिर एहिमे अछि की ? झटकि कऽ
चलला कारणेँ थाकि गेल छल ।
एकटा गाछतर बैसल । तावत गामक
चारि पाँच गोटे गाड़ी पकड़वाक हेतु
अपस्यांत भेल आवि रहल छलैक ।
एकरा पुछलकैत गाड़ी दऽ तँ ई
आश्चर्यतः हँसत कहलकैक जे हम ओही
गाड़ीसँ उतरलहुँ अछि । गाड़ी चल
गेलह । ओही सब असोथकित भेल
ओही ठाम बैसि रहल आ तमाक
चून चलऽ लगलैक ।

एक गोटे पुछलकै—की छऽ ही ?

‘हदियाइ छऽ किए ? कुटुम्बैतामे
सनेस देने छै । देखत मोन छऽ तऽ
देखि लैह’ ई हँसत ओहि मटकूड़ीक
काड़ा फोललक । ताहि तरमे वीर
पातसँ बान्हल छलैक । फेर तकरी
फोललक । वीर पातकेँ हँसत देरी
जे बहरयलैक से बैसलाहा लोकक
अँतरी बाहर कऽ लगलैक ।

सब ठहाका मोरैत फेकैत कह-
लकै—कुटुम्बैतामे सनेस बड़ा बढ़ियाँ
देलकऽ । एकर मुँह विधुआइत गेलैक
—तः छकीलक भकुआ ।

अमुरवस्तु लोक आह्लाद पाओत, ई तकरे भूमिका थिक । चन्द्रमाके अपना किरण नहि छैक, सूर्यसँ किरण भेटैत छैक, कामदेव देवतालोकनिसँ प्रेरित भऽ शर-सन्धान कयलनि अछि जाहिसँ शिव परिलुप्त-धैर्य भेलाह अछि । आ हुनक दृष्टिपात 'उमामुखे' होइत अछि, परम्परागत संस्कारे उमामुख चन्द्रमा जकाँ अप्रत्यक्ष रूपे स्वयमेव अनुभूत भऽ उठैत अछि । चन्द्रक उदय एखन नहि भेलैक अछि, उदयक आरम्भिक मुहूर्तमे विराट् अम्बुराशिमे जे ईषत् चांचल्य होइत अछि, केवल ओकरे द्वारा महादेवक योगसमाहित चित्तक चांचल्य मर्यादित रूपे अभिव्यक्त भऽ सकैत छल ।

सरिपहुँ महादेवक चित्त एहन विराट् छनि जे समुद्र वक्ष जकाँ जहिना ओ उद्वेलित भऽ सकैत छनि तहिना समुद्रे जकाँ भीषण रौद्र मूर्तिओ धारण कऽ सकैत छनि । महादेवक विशुद्ध चित्तक समुद्रवत् प्रचण्डाघात मात्रसँ एक निमिषमे सम्स्त सृष्टि वस्तु भऽ उठत । एहि गभित सम्भावनाक पृष्ठभूमिमे देवाधिदेवक मोनक ईषत् उद्विग्नता कतेक सार्थक आ अनुपम रूपमे अभिव्यक्त भेल अछि ?

वस्तुतः कालिदासक उपमामे जे आनुपातिक सम्बन्धक आनुषंगिक संस्थापन अछि से बड़ चामत्कारिक अछि । रूप-सादृश्यक द्वारा गुण-कर्मक जे आनुपातिक सम्बन्ध परिस्फुट होइछ से अभिव्यक्तिके मधुरसँ मधुर-तर आ गम्भीरसँ गम्भीरतर बना दैछ । एक टा दोसर चित्र अछि—काम-दहनक बाद उमा जखन महादेव द्वारा प्रत्याख्यात होइत छथि तँ बड़ मर्यादित भऽ कऽ घरदिसकेँ प्रत्यावर्तित होइत छथि । पिता हिमालय अपन दुलारि कन्याक एहि स्थितिकेँ मनेमन वृत्तिकऽ द्रवित आ वत्सल भऽ उठैत छथि । ओ चट दऽ आविकऽ बेटीकेँ गोरमे उठा लैत छथि ।

पदि मुकुलिताक्षीं

रुद्रसंरम्भभीत्या

हतरमनुकम्प्या-

मद्रिरादाय दोभ्याम्

गज इव विभ्रत्

पदिमनीं दन्तलग्नां

पथगतिरासीद्

वेगदीर्घोक्तांगः ।

शिव द्वारा प्रत्याख्यात भेलापर रूद्रक कोपाग्निसँ भयभीत, आंखि मुनने अपन दुलारि बेटीक मर्मन्तुद स्थिति देखि दयाद्रवित भेल हिमालय सहसा ओतऽ आवि, दुहुँ बाँहि पसारि कऽ कोरमे उमाकेँ उठा लेलनि आ जेना सुरगज ऐरावत दन्तलग्न नलिनीकेँ जुगताकऽ लेने चलैछ, तहिना पँध-पँध डेग दैत अपन शरीर विस्तृत कऽ बिदा भेलाह ।

नगाधिराज हिमालयक दुहुँ हाथमे सुकुमारि उमा वृषि पड़ैत छथि जेना ऐरावतक दुहुँ दाँतमे संलग्न सुकोमल कमलिनी हो । कर्कश देह, धूसरवर्ण विराट् हाथीक दुग्धधवल दुहुँ दाँतमे लेपटायल छोट-छोत सन कोमल कमलिनी जेना सुशोभित हो तहिना नगाधिराजक उभर-खाभर, धूसर, विराट् वक्षमे सटलि हिमरश्मेत दुहुँ बाँहिपर उठाओलि आतंकित, लज्जाकुल, लाल सन भेलि, कोमलांगी तन्वी, उमा सुशोभित भऽ रहलीह अछि । बलवान् विराट् हाथी जेना क्षणभरिमे गाछ-वृक्षकेँ तोड़ि-ताड़ि समस्त वनकेँ भयवस्तु कऽ दैछ, मुदा कखनो ओही भीषण बलवान् हाथीक कर्कश शरीरक भीतरसँ एहन कोमल स्नेहभाव प्रकट होइछ जे ओ बड़े स्नेहसँ अतिशय कोमल कमलिनीकेँ तेहन यत्न आ प्रेमसँ उठौने रहैत अछि जे ओकर कोनो दलकेँ कनेको आघात नहि लगैक । तहिना जे हिमालय क्रुद्ध भेलापर निमिष मात्रमे सम्पूर्ण परिवेशकेँ अस्तव्यस्त कऽ प्रचण्ड संहारक दृश्य उपस्थित कऽ दैत छथि तिनका छातीमे पितृस्नेहक वत्सल करुणा कतेक मधुर अछि ?

कमलिनी सद्य उदास, मुरु-झायलि, संकुचित तखनका मुकुलित-नयना पार्वतीजीक भीत, कुंठित, दयनीय मनःस्थिति, हिमालयक वात्सल्य, हठात् आगमन आ रूसलि कन्याकेँ दुलारसँ उठा लेब, दुहुँ बाँहिक विस्तार, देहक विस्तार तथा पँध-पँध डेग दऽ कऽ बेगसँ प्रस्थान । वस्तुस्थितिक सड़ हि भाव-स्थितिक अद्भुत चित्र उपर्युक्त उपमाक माध्यमे एहि ठाम साकार भऽ उठल अछि ।

कुमारसम्भवक एक टा आरो प्रसंग द्रष्टव्य अछि । महादेव ब्रह्म-चारीक छद्मवेषमे कठोर तपस्विनी पार्वतीक आश्रममे अबैत छथि आ

वार्तालापक क्रममे बड़ दुराग्रहसँ शिव-निन्दा करऽ लगैत छथि । पहिने तँ पार्वती बहुत प्रतिवाद करैत छथिन, पछाति हारिकऽ अपन अभीष्ट देवताक निन्दासँ अकच्छ भऽ कऽ दुहुँ कान मूनि लैत छथि आहुँ र दऽ कऽ । मुदा वाचाल, चंचल, ब्रह्मचारी, वटु कोनो तरहँ चुप्पे नहि होइत छथि । भारतीय संस्कृतिक परम्परा अछि जे अपना आश्रममे आगत अतिथिकेँ चलि जयवा लेल नहि कहल जा सकैछ । वटुकक वाचालता स्थितिकेँ असह्य बना देने अछि । पार्वतीजी तामसेँ आकुल-व्याकुल आ आवेशेँ उत्तेजित भेलि हठात् उठिकऽ अपनहि अन्यत्र चलि जयवाक वेगवती इच्छासँ जाय लगैत छथि । हड़बड़ीक कारण स्तन-वल्कल ससरि जाइत छनि । डेग उठौने पराङ्मुख भेलि पार्वतीक हाथ पाछाँसँ भगवान् शंकर सहसा पकड़ि अपना रूपमे प्रकट भऽ जाइत छथि । पार्वतीक मुँह दोसर दिस छनि तँ हाथ पकड़व-केँ ओ धृष्ट वटुकक उद्वृण्डता बूझैत छथि । फलतः पार्वतीक क्रोध आरो बढ़ि जाइत छनि । उत्तेजनापर उत्तेजना । क्रोधस्थिति पराकाष्ठापर पहुँचि जाइत छनि । एकदम असह्य भेलि ओ बड़े वेगसँ धूमिकऽ देखैत छथिः—

तं वीक्ष्य वेपथुमती

सरसांगयष्टि-

निक्षेपणाय पदमुद-

धृतमुदहन्ती

मार्गाचल-व्यतिकरा-

कुलितेव सिन्धुः

शैलाधिराजतनया

न ययौ न तस्थौ ।

जाहि इष्टदेवताक प्राप्ति लेल एतेक उग्र तपस्या पार्वती कऽ रहलीह अछि ताहि शंकरकेँ सोझाँमे प्रत्यक्ष देखि, घामेँ भीजलि आ आवेशेँ थर-थराइत गिरिराजनन्दिनी आगाँक हेतु प्रस्थानोद्यत चरण उठाइयो कऽ ने जाइये सकलीह आ ने ठाढ़िये रहि सकलीह । “न ययौ न तस्थौ ।” एनमेन जेना पहाड़ द्वारा प्रतिरुद्ध गतिवाली वेगाकुल नदी हो । पार्वतीक हृदयमे जे एकहि सड़ प्रवाहित क्रोध, आक्रोश, आनन्द, अनुराग, लज्जा आ संकोचक भाव तरंगित भऽ उठल तकरा सभमेसँ ककरो ने ओ प्रकटे कऽ पाबि रहल छलीह आ ने रोकिये पाबि रहल छलीह । सोझाँमे ठाढ़

तुलसी

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

हे वृद्ध तपस्वी !
हृदय अहाँक पखारल छल
गङ्गाजलसँ
तेँ गङ्गाजलक समान
परम पावन, निर्मल,
कल कल करैत
वहि चलल काव्य धारा अविरल
अन्तरक हिमालयसँ
शीतल,
बीतल युग-युग
नहि शीतलताक लता मुखल
दिन दिन फुलाय
ओ फड़ुय स्वादु सुमधुर
सौरभसँ भरल-पुरल ।
हे श्रद्धाक स्वरूप !
कयल की कठिन साधना ?
वैदेहीपति चरण अर्चना
जानकीक पद कमल बसल
जा मनमथकर
मधु पीबि
कयल जे रस-संचय
से, करय नाश भवताप
हरय हृदयक संशय ।

महादेव कलप्रवाहित नदीक समक्ष अचल पाषाणस्तूप जकाँ छलाह । पार्वतीजीक केवल बाह्ये गति नहि आभ्यन्तरिकी प्रवाह ओना उठल । उपमाक एतेक सूक्ष्म, मार्मिक, सर्वाङ्ग-पूर्ण, सुन्दर आ सशक्त रूप महाकविये दऽ सकैत छलाह ।

उमा-महेश्वरक सम्बन्धमे हिनक एक टा आरो उपमा-सौन्दर्य देखू । पार्वती आ महादेवक विवाह भऽ गेलनि अछि । विवाहोपरान्त शुक्ल दुकूल परिहित महादेवकेँ शुभ्र फेनपूज शोभित समुद्रसँ आ नवबधू उमाकेँ तटभूमिसँ उपमा दैत कुमारसम्भवमे कालिदासक उक्ति छनि—

दुकूलवासाः स बधूसमीपं
निन्ये विनीतंरवरोधदक्षंः
वेला-सकाशं स्फुट फेनराजि-
नंदैरुदन्वानिव चन्द्रपादैः ।

अर्थात् जेना नवोदीयमान चन्द्रकिरण, फेनयुक्त समुद्रकेँ तटभूमिक समीप अग्रसर कऽ दैत अछि तहिना, वर-वेशी महादेवकेँ परिचादिकागण उमाक